वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नरेश मेहता की 'संशय की एक रात'

(शोध-पत्र/Research Paper)

श्री नरेश महता (1922-2000ई.) हिन्दी के शीर्षस्थ रचनाकारों में एक है। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में लिखा है- काव्य, खण्डकाव्य, उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबंध, यात्रावृत्तांत, डायरी, संस्मरण आदि में उनकी लगभग समान गति रही है। यही कारण है कि 1992 ई. में उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार मिला। नरेश मेहता द्वारा लिखित "संशय की एक रात" खण्डकाव्य वर्तमान परिप्रेश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक भी है। उन्होंने भारत के प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य "रामायण" के महत्वपूर्ण बीजप्रसंग "सिंधु तट पर सेतुबंध के पश्चात् की घटना" को इस नाटकीय खण्डकाव्य का आधार बनाया है, और अपने युग की मूल समस्या, युद्ध की समस्या को वाणी प्रदान की है। "रामायण" के महत्वपूर्ण विमर्शों को अपनी सृजन-प्रतिभा से युगानुकूल वाणी देनेवाले नरेश मेहता ने प्राचीन मिथकों को आधुनिकता की कसौटी पर कसकर उन्हें आधुनिक संदर्भ में अति प्रासंगिक बना दिया है।

आज विज्ञान का युग है और इसका पर्याप्त विकास भी हो रहा है। नित्य प्रति नये-नये शस्त्रास्त्र बन रहे हैं और एक राष्ट्र दूसरे पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए नये-नये आविष्कारों में लगा हुआ है। ऐसी दशा में यदि कहीं युद्ध आरंभ हो जाता है, तो अब विनाश के अतिरिक्त और कुछ संभव नहीं। सन् 1962 में 'चीन-युद्ध' की पृष्ठभूमि में लिखा गया यह खण्डकाव्य युगीन संदर्भ में अति प्रासंगिक है, जिसमें युद्ध जैसे आदिम और सनातन काल से चले आ रहे प्रश्न को मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श पुरुष और शील, शक्ति, प्रश्नाकुलता, युद्ध के प्रति संशयग्रस्त मन और युद्ध की विभीषिका से भयभीत संवेदनशील चरित्र को अभिव्यक्ति दी है। अपनी इसी विशेषता के कारण खंडकाव्य सामान्य जन से तादात्म्य स्थापित करने में सफल हुआ है, वहीं युगानुरूप परिस्थितियों में प्रासंगिक भी बन पड़ा है। क्योंकि युगीन सरोकार और परिवेशगत स्थितियों में आलोच्य कृति की प्रेरणात्मक पृष्ठभूमि तैयार की है । 'संशय की एक रात' जिस युग की रचना है वह युग वास्तव में विघटन का युग है और यह विघटन किसी एक संदर्भ में नहीं, प्रत्युत कई संदर्भों में हैं।-- (डा. बलभीगराज गौर--हिन्दी के बहुचर्चित काव्य नए संदर्भ, पृ. 34)

'संशय की एक रात' में कवि ने राम और रावण पक्ष के युद्ध की पृष्ठभूमि पर वर्तमान युद्ध सम्बंधी समस्या को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सेतुबंध पूरा होने के बाद दोनों पक्षों की सेनाएं आक्रमण के लिए तैयार हैं। इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर कवि द्वारा राम की द्वंद्वात्मक मनोस्थिति का चित्रण अत्यंत सोद्देश्य जान पड़ता है। युद्ध की पूर्वरात्रि पर सेनानायक श्रीराम के मन में यह प्रश्न उठना अत्यंत स्वाभाविक है कि क्या युद्ध अनिवार्य है? क्या युद्ध के बिना शांति संभव नहीं। राम के मन की दुविधाग्रस्त स्थिति के चरम विकास के लिए मेहता जी सिंधु तट को सर्वाधिक उचित मानते हैं। कवि के अनुसार- "अपने विशेष प्रयोजन के लिए राम कथा का मैंने यह स्थल चुना, जो घटनाहीन था, किन्तु मेरी रचना संभावना के लिए उर्वर। राम जिस दुविधा को प्रस्तुत करते हैं, उसके लिए यही उपयुक्त स्थल था-

यह अंतरीय मन का, स्थल का। -- (संशय की एक रात, पृष्ठ-54)

संशय की स्थिति में व्यक्ति किसी कार्य या परिस्थिति के करने न करने, होने न होने की संभावना में उलझा रहता है और एक निर्णय पर पहुँचने तक इसी मनोदशा में डूबता-उतराता रहता है। राम भी संशय की स्थिति में युद्ध और शांति जैसे दो विपरीत ध्रुवों के मध्य चिरद्वंद्व की उस स्थिति में पहुँच जाते हैं, जहाँ मूल्यों की टकराहट होती है। राम की इसी संशयग्रस्त मनोदशा के माध्यम से युद्ध जैसे महत्वपूर्ण विषय पर

किया गया विवेचन रचना को कालजयी बना दिया है। राम जानते हैं कि –

यदि मैं मात्र कर्म हूँ।
तो यह कर्म का संशय है।
यदि मैं मात्र क्षण हूँ तो यह क्षण का संशय है।
यदि मैं मात्र घटना हूँ, तो यह घटना का सशय है।–(संशय की एक रात पृष्ठा-62)

प्रस्तुत खंडकाव्य का प्रारंभ रामेश्वरम के सिंधु तट पर सेना की तैयारियों और राम के आत्ममंथन से शुरु होता है। युद्ध के लिए राम के आदेश की प्रतीक्षा है, लेकिन उसी समय रामके मन में उठ रहे संशय तीव्र हो जाते हैं। राम एक 'प्रज्ञा प्रतीक' के रूप में युद्ध के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करते हैं। घटना का मूल कथ्य ऐतिहासिक, पौराणिक एवं अत्यंत संक्षिप्त होते हुए भी मानवीय संवेदनाओं और मनुष्य के अस्तित्व से जुड़ा है, इसलिए अत्यंत व्यापक और जटिल है। नरेश मेहता के अनुसार- 'युद्ध आज की प्रमुख समस्या है, संभवतः सभी युग की। –(संशय की एक रात, शीर्षवंध) इसी समस्या से चिंतित होकर उन्होंने राम के संशयानुकूल मन को युद्ध के इन विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करते हुए दिखाया है कि-

1. सत्य तथा न्याय प्राप्ति के लिए युद्ध अनिवार्य है। जब तक मानव मन में से विकार-ग्रंथियॉ निकाल नहीं दी जाती, गांधीवादी-सर्वोदयी साम्यवाद की प्रतिष्ठा नहीं हो जाती, तब तक विवेकशील मनुष्य को विकारों के साथ संघर्ष करते रहना चाहिए।
2. युद्ध परिस्थितिजन्य कर्म है, परिस्थितियाँ युद्ध को जन्म देती है, मनुष्य नहीं।
3. मन के धर्म को तन का धर्म बनाकर संघर्ष से पलायन उचित नहीं।

राम पहले सामान्य जन के समान ही युद्ध के प्रति नकारात्मक भाव रखते हुए कहते हैं कि-

हम साधारण जन,
युद्ध प्रिय थे कभी नहीं।–(संशय की एक रात)

आलोच्य खंडकाव्य की समस्त घटनाएँ एक ही रात के भीतर घटित होती है। कथा का प्रत्येक पात्र मिथकीय होते हुए भी वर्तमान संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। इस "एक रात" का संघर्ष युद्ध और शांति का पक्ष-विपक्ष का संघर्ष है। राम यदि संशयग्रस्त व्यक्ति के प्रतिनिधि हैं, तो लक्ष्मण लघु मानव के प्रतीक। "राम जिस विराटत्व की कल्पना में क्षण के विवेक को निष्ठा और विकल्प को , कर्म और वर्चस्व को, शंकालु होकर अपने से अलग कर देना चाहते हैं, वहीं पर लक्ष्मण इनकी परम्परागत अर्थवत्ता के नए स्वर जोड़ते हैं।"-- (आधुनिक कविता की उपलब्धि : संशय की एक रात, पृष्ठा-7 , लक्ष्मीकांत वर्मा)

लक्ष्मण और हनुमान जहाँ प्रजा का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं सीता साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता है, जिसको पाना उनका पुनीत कर्तव्य है:

हम कोटि-कोटि जनों की तो केवल प्रतीक है
रावण अशोक बन की सीता,
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता। –(संशय की एक रात)

युद्ध वर्तमान समय की एक गंभीर समस्या है, जिसमें विश्व का प्रत्येक देश और साधारण मनुष्य भयभीत है। प्रस्तुत खंडकाव्य में जो संशय एक राजकुमार का था, शायद इसीलिए वह(संशय) साधारणीकरण का रूप ले लेता है। एक संवेदनशील कवि के रूप में नरेश मेहता ने विविध पात्रों के माध्यम से युद्ध और विश्वशांति के मुद्दों को बेबाकी से उठाया है और युद्ध के कारणों, स्थितियों, संभावनाओं और परिणामों आदि पर गंभीर चिंतन किया है। जब कोई अन्यायी सम्राट अपने अहं की तुष्टि या साम्राज्य विस्तार के लिए दूसरे क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो युद्ध अवश्यंभावी हो जाता है। विभीषण भी श्रीराम के

संशय से ऊपर उठकर युद्ध करने का निवेदन करते हैं, वे युद्ध के अनिवार्यता पर जोर देकर कहते हैं-

युद्ध/मंत्रणा नहीं
एक दर्शन है राम। अंतिम मार्ग है
स्वत्व और अधिकार अर्जन का। –(संशय की एक रात पृष्ठ-64)

लेकिन श्रीराम युद्ध की विभीषिका को जानते हुए ही, समस्त सृष्टि को युद्ध से बचाना चाहते हैं-

मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है/ उसको ही
हाँ उसको ही जगाना चाहता रहा हूँ बंधु। – (संशय की एक रात पृष्ठ-19)

वे युद्धोन्मुत व्यक्ति का विवेक जागृत कर उसे युद्ध से विमुख करना चाहते हैं। वे पशु को उसकी पशुता से उत्तर नहीं देना चाहते। उदात्त एवं मानवीय गुणों से परिपूर्ण यही सत्य उन्हें मानव से महामानव की ओर ले जाता है। श्रीराम को हिंसा बिल्कुल प्रिय नहीं, वे युद्ध से मुक्ति चाहते हैं-

मैं सत्य चाहता हूँ युद्ध से नहीं
खड्ग से भी नहीं
मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ
क्या यह संभव है।
क्या यह नहीं है। –(संशय की एक रात)

राम का प्रमुख संशय यही है कि मानव का आभीष्ट क्या है – युद्ध या शांति। युद्ध से क्या प्राप्त किया जा सकता है। व्यष्टि से समष्टि का द्वंद्व उन्हें मथता है। वे सोचते हैं कि सीता को उद्धार करना उनका व्यक्तिगत समस्या है, इसलिए व्यक्तिगत समस्या के समाधान के लिए पूरे समाज को युद्ध के गर्त में नहीं फेंकना चाहते। वे कहते हैं-

धनुष, बाण, खड्ग और शिरस्त्राण
मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए
बाणविद्ध पारसी सा विवश
साम्राज्य नहीं चाहिए। –(संशय की एक रात, पृ.31-32)

राम हिंसा और अहिंसा के द्वंद्व में फंसकर दुविधाग्रस्त हो जाते हैं। क्यों कि उन्हें अहिंसा प्रिय है। कवि मेहता जी भी गांधीवादी अहिंसा के पक्षधर हैं। उन्हें लगता है कि 'हमारी विकास-यात्रा हिंसा से अहिंसा, असत्य से सत्य की ओर रही है, जबकि शेष मानवता की यात्रा हिंसा की ओर'। श्रीराम भी मानवता के पुजारी है, उनका मानना है कि युद्ध दायित्व है, आवेश नहीं।

जीवन में जितनी भी समस्याएँ आती है, उनके सम्बंध में जिज्ञासाएँ, संशय उठना, कार्य के निर्णय-अनिर्णय की स्थितियाँ बनना स्वाभाविक हैं। ऐसी ही स्थिति श्रीराम के शंकाकुल मन की है। उन्हें युद्ध जीतने/हारने का डर नहीं है, वे कापुरूष भी नहीं है-

लक्ष्मण मैं नहीं हूँ का पुरूष
युद्ध मेरी नहीं है कुंठा
पर युद्ध प्रिय भी नहीं। –(संशय की एक रात)

लेकिन युद्ध की सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं, उनके अनुसार जब तक हो सके युद्ध को टालना चाहिए-

इतिहास के हाथों बाण बनने से अधिक अच्छा है
स्वयं हम अंधेरों में यात्रा करते हुए खो जाएँ,
किसी के हाथों सही, पर विपत्ति खोना है। –(संशय की एक रात)

वे सोचते हैं कि क्या रावण का बध किए बिना रावणत्व को खत्म नहीं किया जा सकता? सीता रूपी समस्त मानवता को अंधकार रूपी रावण में विलीन होने दिया जाए या फिर युद्ध करके स्पृष्टि को आतंक से मुक्त कर रामराज्य की स्थापना का लक्ष्य पूरा किया जाए और नवीन आदर्श मानव का निर्माण किया जाए। वस्तुतः उनका द्वन्द्व रावण से नहीं, रावणत्व की आसुरी प्रवृत्तियों से हैं। इसीलिए वे रावण से वैर नहीं रखते और युद्ध के विकल्प खोजना चाहते हैं। वे युद्ध और उसके बाद होनेवाले विनाश का उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहते हैं-

हाय, आज तक मैं निमित्त ही रहा
कुल के विनाश का।
लेकिन अब नहीं बनूँगा कारण
जन के विनाश का। –(संशय की एक रात)

राम के इन संशयों को दूर करने के लिए दशरथ की छाया कर्म के सिद्धांत का विश्लेषण कर उन्हें ऐसा करने को प्रेरित करती हैं, जिसमें कोई शंका या संशय न हों, सिर्फ यश प्राप्ति होः-

पुत्र मेरे
संशय या शंका नहीं, कर्म ही उत्तर है
यश जिसकी छाया है , उस कर्म को करो। –(संशय की एक रात)

भोर की वेला में निर्णय व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रस्थान करता है। परिषद के बहुमत पर वे युद्धरत होते हैं। बावजूद आश्वस्ति के उनके व्यक्तित्व में विवशता का भाव स्पष्ट दीखता हैः- "अब मैं निर्णय हूँ, सबका, अपना नहीं।" अतः वैयक्तिक खोज भिन्न होने पर भी सामूहिक निर्णय का राम द्वारा स्वीकारना प्रजातांत्रिक मूल्यों को सबल प्रदान करता है-

मुझसे मत प्रश्न करो, ओ मेरे विवेक।
संशय की वेला अब नहीं रही। –(संशय की एक रात)

यह उल्लेखनीय है कि इस पूरे खंडकाव्य में सिर्फ राम ही अपने दायित्वों के चलते संशयग्रस्त दीखते हैं। बाकी सभी पात्र युद्ध को एक दर्शन के रूप में स्वीकार कर उसे अवश्यंभावी मानते हैं। हनुमान जी भी अपनी दृष्टि स्पष्ट करते हुए कहते हैं-

संभव है हमारे कारण ही
अनागत युद्धों की नींव पड़े
पर इस डर से
क्या हम न्याय और अधिकार छोड़ दें। –(संशय की एक रात)

वहीं लक्ष्मण भी संशय और विकल्प के स्थान पर निश्चय तथा संकल्प से युक्त दिखाई पड़ते हैं।

श्री नरेश मेहता ने राम के माध्यम से युगानुरूप नई धारणा एवं मूल्य तलाशने की कौशिश की है। लक्ष्मीकांत वर्मा ने लिखा है- "आधुनिक विसंगतियों का राम में आरोपण तथा उनके माध्यम से अपने युग की समस्याओं के समाधान के रूप में विपरीत मूल्यों, बोधों और मान्यताओं के बीच एक सही दृष्टि अपनाने की प्रेरणा ही मूल अभीष्ट है। यह समस्या अपने में कोई नई चीज नहीं है। इस प्रकार की स्थितियाँ मानव समाज

तथा इतिहास में बारबार उठती रही हैं, लेकिन प्रत्येक युग का 'संशय' अपने ऐतिहासिक दाय और मजबूती से अद्वितीय हो जाता है।" --(आधुनिक कविता की उपलब्धिः संशय की एक रात, पृष्ठा-5)

इस प्रकार 'संशय की एक रात' का सेतुबंध व्यष्टि और समष्टि मन के सेतुबंध अर्थात् समन्वित मानव चेतना का प्रतीक है, जो युद्ध और शांति की आत्ममंथन तथा सामूहिक दायित्वबोध की, आधुनिक युग के खंडित व्यक्तित्व और भौतिकवादी सुखों के पीछे भागने जैसी प्रश्नों को उठाता है, और उनका समाधान खोजना चाहता है।

आज हमारे अपने कई सवाल हैं, हमारी अपनी समस्याएं हैं, जिनका समाधान हमें ढूंढना है। आस्था, अनास्था, व्यक्तित्व, खंण्डव्यक्तित्व, युद्ध और शांति, साम्राज्यवादी दृष्टि, उपनिवेशवादिता– कई समस्याएँ जो हमारे सामने विकल्प बनकर आने लगी हैं। 'संशय की एक रात' इन्हीं सवालों, समस्याओं का आंशिक समाधान है। ..... अतएव 'संशय की एक रात' में कवि ने जिन समस्याओं को उपस्थित किया है, वे समस्याएँ भी पूर्णरूपेण सनातन, प्रज्ञा पुरुष राम की न होकर हमारी हैं।–(डा. बलभीगराज गौर – हिन्दी के बहुचर्चित काव्य नए संदर्भ, पृ.34) अतः प्रस्तुत खंडकाव्य की कथावस्तु में कवि नरेश मेहता ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक विचार प्रकट करते हुए युद्ध और शांति, मानवतावाद, साम्यवाद, निष्काम कर्म, भौतिकवाद, अध्यात्मवाद जैसी आधुनिक सभी समस्याओं का उचित समाधान खोजना चाहते हैं और मानव को कर्मयोग की ओर प्रेरित किया है तथा स्नेह और बलिदान को आधार बनाकर इसी भूमि को स्वर्ग बनाने की कामना व्यक्त की है।

(शोधार्थी- सिकदर आनवारूल इसलाम)
अध्यापक, हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

सहायक ग्रंथः

1. नरेश मेहताः एक एकांत शिखर- प्रमोद त्रिवेदी
2 हिन्दी के बहुचर्चित काव्य नए संदर्भ–डा. बलभीगराज गौर
3. संशय की एक रात- नरेश मेहता
4. आधुनिक कविता की उपलब्धिः संशय की एक रात- लक्ष्मीकांत वर्मा
5. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना
6. समकालीन हिन्दी कविता- डॉ. देशराजसिंह भाटी
7. अपनी माटी, ई- पत्रिका- संयुक्तांक, अगस्त 2016
8. अनुसंधान- त्रैमासिक शोध पत्रिका, जूलाई-दिसम्बर 2015

***